गणित में नैदानिक और उपचारात्मक शिक्षण

नैदानिक मूल्यांकन का मुख्य उद्देश्य सीखने की समस्याओं के कारणों को निर्धारित करना और उपचारात्मक कार्रवाई के लिए एक योजना तैयार करना है

"एक परीक्षण जो किसी कौशल के कुछ विशिष्ट पहलू पर तेजी से केंद्रित होता है या किसी कौशल को प्राप्त करने में कठिनाई का कुछ विशिष्ट कारण होता है, और जो विशिष्ट उपचारात्मक कार्यों का सुझाव देने में उपयोगी होता है जो उस कौशल की महारत में सुधार करने में मदद कर सकता है एक नैदानिक परीक्षण है.“ **–थोर्नडाईक**

" एक नैदानिक परीक्षण ताकत और कमजोरियों की एक तस्वीर प्रदान करने का कार्य करता है." **–पायने**

एक नैदानिक परीक्षण कठिनाइयों का विश्लेषण करने के लिए एक उपयोगी उपकरण है लेकिन यह केवल एक प्रारंभिक बिंदु है। एक प्रभावी उपचारात्मक कार्यक्रम शुरू करने से पहले शिष्य की शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास से संबंधित पूरक जानकारी की भी आवश्यकता है।

नैदानिक परीक्षण में निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान में रखा जाना चाहिए:
(i) वे कौन से छात्र हैं जिन्हें सहायता की आवश्यकता है?
(ii) त्रुटियाँ कहाँ स्थित हैं?
(iii) त्रुटि क्यों हुई?

शैक्षिक निदान में आवश्यक कदम हैं:
जिन छात्रों को परेशानी हो रही है या उन्हें मदद की ज़रूरत है, उन्हें पहचानना: सबसे पहले, उन शिक्षार्थियों को जानना चाहिए जिन्हें मदद की आवश्यकता है। इसके लिए आप पहले से पढ़ाए गए विषयों के आधार पर सामान्य उपलब्धि परीक्षा दे सकते हैं। मूल्यांकन के बाद आप उन छात्रों की सूची बनाने की स्थिति में होंगे जो औसत से नीचे हैं, औसत या औसत से ऊपर हैं। इसके बाद, किसी को उस क्षेत्र का पता लगाना होगा जहां छात्र की कठिनाइयों के बारे में गहन जानकारी प्राप्त करने के लिए त्रुटि उत्पन्न होती है.

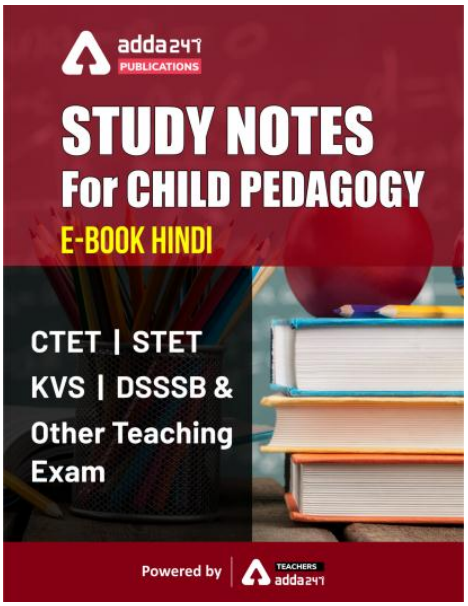

त्रुटियों का पता लगाना या कठिनाइयों का पता लगाना
सीखने की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए अतिरिक्त शिक्षण सामग्री की आवश्यकता की मदद और कल्पना करने वाले छात्रों की पहचान करने के बाद, आपकी मुख्य भूमिका उस क्षेत्र का पता लगाना है जहां शिक्षार्थी गलतियाँ करता है या वह क्षेत्र है जहाँ सीखना है मुश्किलें झूठ हैं।

धीमी सीखने के कारण कारकों की खोज: सीखने की कठिनाइयों के कुछ मामलों में, कारण कारक अपेक्षाकृत सरल हैं। एक छात्र शिक्षण-अधिगम के दौरान असावधान हो सकता है या अपर्याप्त अभ्यास या अनियमित उपस्थिति के कारण त्रुटियां कर सकता है। कभी-कभी इसका कारण अस्वस्थता या दोषपूर्ण कार्य आदतें आदि हैं। यह भी कभी-कभी देखा गया है कि कम उपलब्धि का मूल कारण असहायता की भावना या विषय-वस्तु की जटिलता है जो शायद उनकी समझ के स्तर से बहुत ऊपर है।

उपचारात्मक शिक्षण

उपचारात्मक निर्देश या शिक्षण निर्देश के कारण कठिनाइयों पर काबू पाने में मदद करता है। यह छात्रों को सामान्य स्तर की उपलब्धि हासिल करने में सामान्य छात्रों के साथ रहने में मदद करता है। शब्द "उपचारात्मक शिक्षण" आमतौर पर विभिन्न शिक्षाविदों द्वारा उपचारात्मक निर्देश के बजाय उपयोग किया जाता है.

" उपचारात्मक शिक्षण विशिष्ट और सटीक होने की कोशिश करता है। यह एक ऐसी प्रक्रिया खोजने का प्रयास करता है जिससे बच्चा अतीत की अपनी त्रुटियों को ठीक कर सके और इस प्रकार भविष्य में होने वाली त्रुटि को रोकता है." **-योकम**

उपचारात्मक शिक्षण की मुख्य विशेषताएं:

- उपचारात्मक शिक्षण नैदानिक परीक्षण का एक गतिशील पक्ष है। इसलिए यह शैक्षिक निदान पर निर्भर करता है।
- सीखने और कौशल के अधिग्रहण में कठिनाइयों को दूर करना उपचारात्मक निर्देश का मुख्य उद्देश्य है।
- उपचारात्मक शिक्षण न केवल कमियों को ठीक करने के लिए उपयोगी है, बल्कि निवारक उपायों में भी उपयोगी है।
- उपचारात्मक शिक्षण एक अल्पकालिक उपचार है।
- उपचारात्मक शिक्षण निम्न औसत छात्रों को सामान्य स्तर की उपलब्धि हासिल करने में सामान्य छात्रों के साथ रहने में मदद करता है.

निदान का अंतिम उद्देश्य छात्रों की कमजोरियों और कठिनाइयों को दूर करना है। अगर कुछ भावनात्मक या शारीरिक कारक कमजोरियों के लिए जिम्मेदार हैं, तो संबंधित लोगों की मदद से इन कारकों को खत्म करने का प्रयास किया जाना चाहिए। कारकों को खत्म करने के बाद, उपचारात्मक शिक्षण किया जाना चाहिए। गणित शिक्षक इस उद्देश्य के लिए सुधारात्मक सामग्री भी तैयार कर सकता है। इस प्रकार, उपचारात्मक शिक्षण द्वारा छात्र की कमजोरियों को दूर करने में सफलता प्राप्त की जा सकती है.